जमाअत अहमदिया

के

अक़ीदे

(आस्थाएं)

द्वारा
सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि

जमाअत अहमदिया के अक़ीदे
(आस्थाएं)
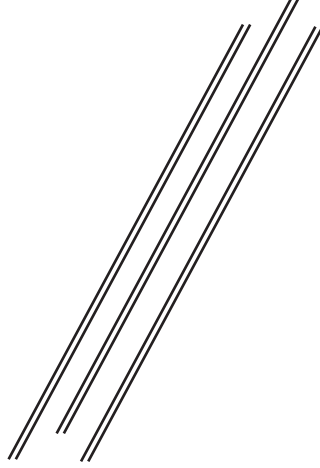
द्वारा
सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि

नाम पुस्तक	: जमाअत अहमदिया के अक़ीदे (आस्थाएं)
Name of Book	: Jamaat Ahmadiyya Ke Aqeede
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि
Writer	: Hazrat Mirza Bashiruddin Mahmood Ahmad, Khalifatul Masih-II R.
अनुवादक	: फ़रहत अहमद आचार्य
प्रथम संस्करण	: मई 2017 ई.
संख्या	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र व इशाअत क़ादियान 143516, ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

आफ़िस नज़ारत दावत-ए-इलल्लाह	आफ़िस नज़ारत इस्लाह व इर्शाद
मुहल्ला अहमदिया क़ादियान 143516	मुहल्ला अहमदिया क़ादियान 143516
ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)	ज़िला गुरदासपुर, पंजाब (भारत)
फोन नम्बर 01872-220757	फोन नम्बर 01872-222763
e-mail : dawateilallahshumali@qadian.in	e-mail : islahoirshadmarkazia@qadian.in

Toll Free Number : 1800-180-2131

समय : प्रातः 10 बजे से रात 10 बजे तक

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जमाअत अहमदिया के अक़ीदे (आस्थाएँ)

(लिखित- मई 1925 ई.)

हमारे अक़ीदे (आस्थाएँ), जिनको दृष्टिगत रखते हुए हमारे धर्म का एक संक्षिप्त नक्शा (आकृति) प्रत्येक की बुद्धि में आ सकता है, ये हैं -

अल्लाह तआला

हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला है और एक है। वह उन सम्पूर्ण विशेषताओं से युक्त है जो क़ुर्आन करीम में वर्णन की गई हैं।

अल्लाह तआला के फ़रिश्ते

हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि फ़रिश्ते अल्लाह तआला की सृष्टि हैं और मनुष्यों से अलग मौजूद हैं काल्पनिक अस्तित्व नहीं हैं, बल्कि वास्तव में वे ऐसे अस्तित्व हैं जिनको अल्लाह तआला ने भौतिक वस्तुओं की अन्तिम कड़ी के तौर पर नियुक्त किया है। वे अल्लाह ताला के आदेशों के लिए सृष्टि में एक ऐसी हरकत पैदा करते हैं जो विभिन्न स्तरों को पार करने के बाद ऐसे परिणाम पैदा कर देती हैं जिनको हम अपनी आँखों के समक्ष देखते हैं।

अल्लाह का कलाम (ईशवाणी)

हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला मानवजाति की हिदायत (मार्गदर्शन) के लिए कलाम (वाणी) उतारा

करता है और जब से संसार उत्पन्न हुआ है (जिसको सीमित करने का हम कोई कारण नहीं पाते वह लाखों और करोड़ों चाहे अरबों साल हो) उसी समय से ख़ुदा तआला अपने विशेष भक्तों से संसार के मार्गदर्शन हेतु वार्तालाप करता चला आया है, अब भी करता है और भविष्य में भी करता रहेगा।

पवित्र क़ुर्आन

हम यह भी विश्वास रखते हैं कि अल्लाह का कलाम (इल्हाम) विभिन्न प्रकार का है। एक प्रकार शरीअत अर्थात ऐसा कलाम जो शरीअत (धार्मिक विधान) पर आधारित होता है और दूसरी प्रकार व्याख्या और मार्गदर्शन होता है अर्थात् उसके द्वारा शरीअत की वाणी की व्याख्या की जाती है और उसके वास्तविक अर्थ बताए जाते हैं तथा लोगों को वास्तविक मार्ग चाहे वह वर्तमान वाणी से सुशोभित व्यक्ति के द्वारा संसार को बताया गया हो और चाहे वह इस से पूर्व किसी ईशवाणी से सुशोभित व्यक्ति के द्वारा संसार को बताया गया हो और एक प्रकार इल्हाम (ईशवाणी) की यह है कि उसका उद्देश्य पूर्णतः विश्वास दिलाना होता है। फिर इल्हाम की एक प्रकार यह है कि उसमें मुहब्बत का इज़्हार भी अभीष्ट होता है और एक अन्य प्रकार इल्हाम की यह है कि उसमें चेतावनी अभीष्ट होती है और इस प्रकार का इल्हाम काफिरों और मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) पर भी अवतरित हो जाता है। हमारा यह विश्वास है कि शरीअत वाली वह्यी इस संसार के लिए पवित्र क़ुर्आन पर समाप्त हो गई।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

हमारा इस बात पर विश्वास है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शरीअत वाले नबियों की अंतिम कड़ी हैं और

क़ुर्आन करीम के बाद कोई शरीअत वाली पुस्तक ख़ुदा की ओर से अवतरित नहीं हो सकती और न रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई ऐसा नबी अवतरित हो सकता है जो शरीअत का नया आदेश लाए या किसी मिटे हुए आदेश को नए तौर पर संसार में लागू करे। अर्थात् न तो यह हो सकता है कि शरीअत (क़ुर्आन करीम) में कोई बढ़ोतरी करे और न यह सम्भव है कि पूर्व अवतरित शरीअत का कोई आदेश जो रद्द हो चुका हो किसी नए नबी के द्वारा लागू हो।

नबी अलैहिमुस्सलाम

हम यह विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला समय-समय पर संसार के सुधार के लिए कुछ मनुष्यों को जो उसके इल्हाम को प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं और जो लोगों के लिए आदर्श बनने का सामर्थ्य रखते हैं अपने कलाम (इल्हाम) से सुशोभित करके संसार के सुधार के लिए अवतरित करता रहा है जो कि कभी तो कलाम शरीअत (धर्म विधान) लेकर संसार में आए हैं और कभी केवल हिदायत (मार्गदर्शन) ही लेकर आते हैं स्वयं उन पर कोई ऐसा कलाम (शरीअत) अवतरित नहीं होता जिसमें कोई नया आदेश हो।

बिना शरीअत वाला नबी

हमारा यह विश्वास है कि दूसरी किस्म के नबी जो शरीअत (धर्म विधान) नहीं लाते और केवल पहली शरीअत की व्याख्या करने के लिए अवतरित होते हैं। वे ऐसे युग में अवतरित होते हैं जब मतभेद, रूहानियत (आध्यात्मिकता)से दूरी, ख़ुदा तआला से दूरी, तक़्वा (संयम) की कमी और नेकी (अच्छाई) का अभाव उस समय के लोगों में से शरीअत के सही अर्थ करने की योग्यता को मिटा

देता है। और यदि किसी मामले में लोग अर्थ ढूँढ भी लें तो राय में इतना मतभेद हो चुका होता है कि किसी व्यक्ति को सन्तुष्टि नहीं हो सकती कि यह अर्थ सही हैं और जबकि ख़ुदा तआला की शक्ति और सामर्थ्य लोगों की दृष्टि से पूर्णतः ओझल हो जाते हैं उसका अस्तित्व किस्सों और कहानियों में सीमित हो जाता है और उसके ताज़ा-ताज़ा जल्वे दुनिया में नहीं आते उस समय अल्लाह तआला की ओर से ऐसा नबी भेजा जाता है जो अल्लाह के कलाम की सही व्याख्या लोगों तक पहुंचा देता है जो उसको ख़ुदा तआला कि ओर से मिलती है। और ताज़ा निशानों (चमत्कारों) के साथ ख़ुदा तआला के जल्वे (तेज) को प्रकट करता है जिस से विरासत में मिला हुआ ईमान जो वास्तव में एक कौड़ी के सामान भी हक़ीक़त नहीं रखता विश्वास का मुकाम प्राप्त कर लेता है।

नबियों का आना

हमारा विश्वास है कि उम्मत के सुधार के लिए प्रत्येक आवश्यकता के अवसर पर अल्लाह तआला अपने नबियों को भेजता रहेगा। और हम यह भी मानते हैं कि क़ुर्आन करीम और हदीसों में इस युग के बारे में विशेष रूप से यह भविष्यवाणी की गई थी कि उस समय जबकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा, जो पुस्तकों में तो मौजूद होगी परन्तु लोगों के दिलों से लुप्त हो जाएगी और ईमान और विश्वास के दृष्टिकोण से वह सुरय्या पर चली जाएगी (अर्थात् संसार से पूर्णतः विलुप्त हो जाएगी, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही की उम्मत में से एक ऐसा व्यक्ति प्रकट होगा जो पुनः क़ुर्आन करीम की वास्तविकता लोगों पर प्रकट करेगा और उनके ईमानों (विश्वासों) को ताज़ा करेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हमारा विश्वास है कि वह मौऊद व्यक्ति प्रकट हो चुका है और उनका नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी है। हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बताई हुई हिदायत और आप से पहले नबियों की भविष्यवाणियों के अनुसार यह विश्वास रखते हैं कि आप मसीह मौऊद थे जिनके द्वारा ख़ुदा तआला ईसाइयत के फ़ित्ने को टुकड़े-टुकड़े करेगा और आप मेहदी मौऊद थे जिनके द्वारा अल्लाह तआला ने मुसलमानों का सुधार करना है और आप कृष्ण तथा अन्य बुज़ुर्ग जो विभिन्न क़ौमों में आए हैं उनके प्रतिरूप थे जिन नामों के द्वारा आपने उन क़ौमों को इस्लाम की ओर लाना है। आप के द्वारा अल्लाह तआला ने प्रचार-प्रसार को पूर्ण करने का कार्य करना है और वह कर रहा है।

मामूर (अवतार) को स्वीकार करना

हमारा विश्वास है कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर से आता है उस पर ईमान लाना और उसका साथ देना और उसकी जमाअत (समुदाय) में सम्मिलित होना आवश्यक है अन्यथा वह उद्देश्य समाप्त हो जाता है जिसके लिए ख़ुदा तआला कि ओर से मामूर (अवतार) आया करते हैं। यदि ख़ुदा तआला की जमाअत में सम्मिलित होना आवश्यक न होता तो जैसा क़ुर्आन करीम से स्पष्ट है कि नबी का विरोध उस समय के बड़े लोगों की ओर से आवश्यक है। किसी को क्या आवश्यकता है कि वह एक अनावश्यक काम के लिए सारी दुनिया का विरोध सहे। एक जमाअत तभी इस उद्देश्य को लेकर खड़ी हो सकती है कि वह उस मामूर की सहायता करेगी और उसके काम को संसार में फैलाएगी जबकि वह समझती हो कि बिना उसके हम ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को प्राप्त नहीं कर

सकते। अतः वह संसार के घोर विरोध को जिससे बढ़कर अन्य कोई विरोध नहीं होता ख़ुदा तआला की प्रसन्नता हेतु सहन करने के लिए तैयार हो जाती है।

दुआ (प्रार्थना)

हम यह विश्वास रखते हैं कि ख़ुदा तआला दुआओं को स्वीकार करता है।

जज़ा-सज़ा (कर्मों का फल)

हमारा विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य जब मर जाता है उसके कर्मों के अनुसार उसके साथ बर्ताव किया जाता है इस समय में जिसको क़ब्र का समय कहा जाता है परन्तु इस से अभिप्राय मिट्टी की क़ब्र नहीं बल्कि इस से अभिप्राय वह विशेष मुकाम है जिसमें मुर्दों की रूहों (आत्माओं) को रखा जाता है और उस समय भी जज़ा-सज़ा (कर्म-फल) मिलेगी जब यह क़ब्र का ज़माना समाप्त हो जाएगा और इस हश्रे कबीर (महाप्रलय) का ज़माना आरम्भ हो जायेगा।

अल्लाह की रहमत (दया)

हमारा यह विश्वास है कि अल्लाह तआला की रहमत उसकी सम्पूर्ण विशेषताओं के साथ अपना प्रभाव प्रकट करती है और उसकी महान रहमत के अन्तर्गत अन्ततः एक दिन ऐसा आयेगा कि सम्पूर्ण मानवजाति चाहे वह कैसी ही बुराई और अश्लीलता, और कैसे ही गुनाह और कुफ़्र में, शिर्क (ईश्वर का भागीदारी बनाना)या नास्तिकता में लिप्त हों उनको उसकी रहमत अपने अन्दर समेट लेगी और अन्ततः वह बात जो इन्सान के जन्म के समय ख़ुदा तआला ने उनसे कही पूरी हो जाएगी। अर्थात्

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

(अज्ज़ारियात-57)

अर्थात् - सम्पूर्ण मानवजाति उसके भक्त और उसकी उपासना करने वाले हो जाएंगे। प्रत्येक व्यक्ति अपने दर्जे के अनुसार बदला पाएगा। न किसी की कोई नेकी (अच्छाई) व्यर्थ जाएगी और न किसी कि बुराई व्यर्थ जाएगी। मूर्ख है जो यह विचार करता है कि आख़िर में जब दोज़ख़ (नर्क) को मिटा दिया जायेगा तो फिर सज़ा कैसी हुई। संसार में प्रतिदिन लोगों को सज़ा मिलती है फिर वह छूट जाते हैं परन्तु वह सज़ा ही कहलाती है। दोज़ख़ (नर्क) की सज़ा का युग इतना व्यापक है कि उसका विचार करके ही दिल कांप जाता है कि अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में उसको "अबद"के शब्द द्वारा वर्णन करता है अर्थात हमेशा। मानो उसको यूँ समझना चाहिए कि वह समाप्त होने वाली नहीं होगी, तो कौन व्यक्ति ऐसा है जो इतनी लम्बी सज़ा सहन कर सके। फिर उससे अधिक क्या सज़ा हो सकती है कि एक ख़ुदा तआला का अवज्ञाकारी उस समय जबकि उसके भाईबन्ध अल्लाह तआला के प्रेम के मैदान में दौड़ रहे होंगे और पल-पल रूहानियत (आध्यात्मिकता) में उन्नति कर रहे होंगे वह अपनी गुनाहों से सनी हुई रूह (आत्मा) को नर्क की आग में जलाकर साफ़ कर रहे होंगे। किसी घुड़दौड़ के सवार से पूछो कि उसको दौड़ते समय रोक लिया जाए और बाद में छोड़ दिया जाए तो उसको कितना सदमा पहुँचता है।

अल्लाह का दीदार (दर्शन)

हमारा यह विश्वास है कि मनुष्य की रूह (आत्मा) उन्नति करते-करते ऐसे दर्जे को प्राप्त कर लेगी जबकि उसकी शक्तियाँ मौजूदा शक्तियों की अपेक्षा इतनी अधिक होंगी कि उसे एक नया

अस्तित्व कहा जा सकता है परन्तु चूँकि वह उसी रूह की उन्नति होगी इसलिए उसका नाम यही होगा जो अब इस संसार में उसको प्राप्त है। उस समय रूह इस योग्य हो जाएगी कि अल्लाह के ऐसे जलवे को देखे और ऐसा दीदार उसको प्राप्त हो जो कि यद्यपि वास्तविक नहीं होगा फिर भी इस संसार के मुकाबले में दीदार और यह संसार उसके मुकाबले में पर्दा कहलाने के योग्य होगा।

नुबुव्वत और कलाम (इल्हाम) का सिलसिला जारी है

हमें लोगों से यह मतभेद है कि लोग यह समझते हैं कि अल्लाह तआला ने केवल यहूदियों के साथ नबुव्वत का सिलसिला विशेष किया हुआ है और क़ुर्आन करीम की बहुत सी आयतों के बावजूद अन्य समस्त क़ौमों को ख़ुदा और उसके नबियों से वंचित समझते हैं। फिर हमें उन लोगों से यह मतभेद है कि उनका विचार है कि ख़ुदा तआला ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद प्रत्येक प्रकार के कलाम (इल्हाम) को रोक दिया है हालांकि शरीअत वाले कलाम (इल्हाम) के अतिरिक्त किसी प्रकार के कलाम के रुकने का कोई कारण नहीं। कलामे शरीअत के पूर्ण हो जाने से मार्गदर्शक कलाम और व्याख्यात्मक कलाम की आवश्यकता समाप्त नहीं हो जाती बल्कि उसकी आवश्यकता और भी बढ़ जाती है क्योंकि यदि शरीअत आ सकती है तो पिछली शरीअत के लुप्त हो जाने में कोई आपत्ति नहीं परन्तु यदि शरीअत आनी बन्द हो जाये तो उसकी व्याख्या की बहुत अधिक आवश्यकता होती है अन्यथा हिदायत की कोई राह नहीं रहती। यदि कहा जाये कि मनुष्य व्याख्या करते हैं तो (याद रहे) कि उनकी व्याख्यायों में इतना मतभेद होता है कि एक-एक व्याख्या में 20-20 विपरीत विचारधाराएँ वर्णन की जाती हैं। ख़ुदा का कलाम तो ठोस विश्वास पैदा करने के लिए आता

है धार्मिक विषयों में भी यदि संशय ही शेष रहा तो मुक्ति कहाँ से प्राप्त होगी।

उम्मते मुहम्मदिया से मामूर (अवतार)

फिर हमें लोगों से यह मतभेद है कि वे तो यह समझते हैं कि इस समय सुधार के लिए मूसवी सिलसिला के मसीह को आकाश से उतारा जाएगा और हम कहते हैं कि (उम्मत के) बाहर से किसी व्यक्ति के मंगवाने में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान होता है जबकि आपके ही शिष्य और आप से ही अध्यात्मिक लाभ प्राप्त व्यक्ति उम्मत का सुधार कर सकते हैं तो बाहर से किसी व्यक्ति के लाने की क्या आवश्यकता है। वास्तविकता यह है कि अब किसी ऐसे व्यक्ति के आने की आवश्यकता ही नहीं है। मज़हब और धर्म पूर्ण हो चुका है अब इस प्रकार के मामूर (अवतार) की आवश्यकता नहीं जो उम्मते मुहम्मदिया से न हो।

मैत्री की आवश्यकता

फिर हमें उन लोगों से यह भी मतभेद है कि हम ईमान रखते हैं मामूर (अवतार) के आने का उद्देश्य केवल शरीअत (धर्म विधान) लाना नहीं होता बल्कि जैसा कि बताया गया है अल्लाह तआला की भेजी हुई शरीअत की सही व्याख्या और उस पर दृढ़ विश्वास का पैदा करना होता है और अपने आदर्श से लोगों का सुधार करना उसका काम होता है। केवल शरीअत के प्राप्त हो जाने से यह आवश्यकता पूर्ण नहीं हो जाती। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद प्रत्येक प्रकार के मामूर की आवश्यकता केवल उस अवस्था में नकारी जा सकती है जब्कि उम्मते मुहम्मदिया में किसी प्रकार का फसाद पड़ा ही न होता। परन्तु कोई व्यक्ति ज़रा भी

आँख खोल कर देखे चारों ओर उसे फसाद ही फसाद नज़र आयेगा। फिर यह कैसे अचम्भे और मूर्खता की बात है कि लोग कहते हैं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद बीमारी तो होगी परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई डाक्टर नहीं होगा। अगर बीमारी होगी तो डाक्टर भी अवश्य होगा। यदि डाक्टर नहीं आता तो बीमारी भी नहीं होनी चाहिए। परन्तु मुसलमानों की धार्मिक, व्यवहारिक और आध्यात्मिक कमज़ोरी तो अब अन्धों को भी नज़र आ रही है।

क़ुर्आन करीम के मआरिफ़ (अध्यात्मिक ज्ञान)

हमारा उन लोगों से यह मतभेद है कि हम विश्वास रखते हैं क़ुर्आन करीम अपने मआरिफ़ (अध्यात्मिक ज्ञान) और अर्थ हमेशा प्रकट करता रहता है परन्तु विरोधी यह कहते हैं कि समस्त मआरिफ़ पिछले लोगों पर समाप्त हो गए और अब यह किताब ऐसी हड्डी की तरह है जिससे सारा माँस नोच लिया गया हो (नऊज़ुबिल्लाह) आश्चर्य है कि इस संसार में तो नए ज्ञान निकले परन्तु ख़ुदा की किताब में से कोई नया बिन्दु न निकले।

ख़ुदा तआला दुआएं सुनता है

फिर हमारा यह मतभेद है कि हम लोग इस बात पर पूर्ण विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला मोमिनों की दुआएं सुनता है परन्तु यह लोग इन बातों की हंसी उड़ाते हैं।

निशान

फिर हम लोग यह विश्वास रखते हैं कि ख़ुदा तआला उन शर्तों के साथ अपनी क़ुदरत के निशान अब भी प्रकट करता है जो उसने क़ुर्आन में बताई हैं परन्तु हमारे विरोधियों के दो समूह हैं। एक तो

वह है जो कहता है कि इस शिक्षा के युग में ऐसी बातें मत करो और दूसरा समूह वह है जो कहता है ख़ुदा तआला का शक्ति प्रदर्शन तभी हो सकता है जबकि वह अपने निर्धारित नियमों को भी तोड़ दे और अपनी सुन्नत के विपरीत करे। इस कारण वे संसार में ऐसी बातें देखना चाहते हैं जिनके बारे में ख़ुदा तआला स्वयं फ़रमाता है कि में ऐसा नहीं करता। वे लोग आलिम (विद्वान) कहलाते हुए इस प्रकार की बातें करते हैं कि चूँकि ख़ुदा समर्थ है इसलिए वह झूठ बोल सकता है (नऊज़ुबिल्लाह) हालांकि वे नहीं समझते कि झूठ बोलना तो निर्बलता का प्रतीक है। यह उनके अनुसार शक्ति की विचित्र दलील है कि चूँकि वह निर्बल है इसलिए वह समर्थ नहीं।

इस्लाम की उन्नति

इसी प्रकार हमारा उन लोगों से यह मतभेद है कि यह लोग अपनी मूर्खता से विचार करते हैं कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को छोड़ दिया है और इस्लाम को भुला दिया है और इसलिए उनको उन्नति करने के लिए ऐसे प्रयत्न की आवश्यकता है जिस में शरीअत और उसके मार्गदर्शन की कोई परवाह नहीं होनी चाहिए। परन्तु हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला ने ही पहले इस्लाम को स्थापित किया और अब भी वही स्थापित करेगा और हम उसके वादों के कारण निराश नहीं।

मरने के बाद उठाया जाना

हमारा उन लोगों से यह मतभेद है कि हम मरने के बाद उठाए जाने के बारे में यह विश्वास रखते हैं कि उस जीवन में मनुष्य नवीन शक्तियों के साथ उठाया जाता है। वह इसी रूह में से और इसी मनुष्य के कुछ कणों में से उन्नति करके उस अवस्था को प्राप्त

करता है परन्तु यही कण और यही शरीर वहाँ नहीं जाता। लेकिन हमारे विरोधी कहते हैं कि हम इस आस्था के कारण "हश्रे अज्साद" (शरीरों को इकठ्ठा किया जाना) को मानने वाले नहीं।

जन्नत (स्वर्ग) की नेअमतें

हम यह विश्वास रखते हैं कि जन्नत की नेअमतें पूर्णतः इसी रूप में प्रकट होंगी जिस रूप में क़ुर्आन करीम में उनका वर्णन हुआ है परन्तु साथ ही हम यह भी विश्वास रखते हैं कि वहाँ का संसार ही अलग है इसलिए जिस पदार्थ की वस्तुएँ यहाँ हैं उस पदार्थ की वस्तुएँ वहाँ नहीं होंगी परन्तु हमारे विरोधी कहते हैं कि इस आस्था के कारण हम जन्नत के इन्कारी हो गए।

दोज़ख़ (नर्क)

हम यह विश्वास रखते हैं कि दोज़ख़ एक आग है परन्तु हम साथ ही यह भी विश्वास रखते हैं कि वह इस सांसारिक आग जैसी आग नहीं बल्कि वह इस आग से कई बातों में विशेष है। वह अपनी जलन में इससे बहुत अधिक है और वह मनुष्य के दिल को साफ़ कर सकती है। परन्तु यह आग दिल को साफ़ नहीं करती। हमारे विरोधी कहते हैं हम इस आस्था के कारण दोज़ख़ के इन्कारी हो गए हैं।

शाश्वत अज़ाब (यातना)

हमारा यह विश्वास है कि अन्ततः अपनी सज़ाओं (दण्डों) को भुगत कर ख़ुदा तआला की नेअमतों को पाने की योग्यता प्राप्त करके मनुष्य दोज़ख़ में से निकाले जा कर जन्नत में प्रवेश कराए जाएंगे और सब के सब अन्ततः ख़ुदा तआला की नेमत के वारिस हो जाएंगे। हमारे विरोधी कहते हैं इसके कारण हम शाश्वत अज़ाब

के इन्कारी हो गए हैं। हम समझ नहीं सकते कि ख़ुदा की रहमत को छोड़कर उनके शाश्वत अज़ाब को क्या करें।

क़ुर्आन करीम की व्याख्या

यह तो मूल बातें हैं जिनमें हमें अन्य लोगों से मतभेद है। क़ुर्आन करीम की आयतों की व्याख्या में इन्हीं सिद्धान्तों के अन्तर्गत फिर एक विशाल खाई हमारे और उनके मध्य प्रकट हो जाती है। वे अपनी संकीर्ण विचारधाराओं के अन्तर्गत क़ुर्आन करीम के अर्थ करते हैं परन्तु हम क़ुर्आन करीम को इल्हाम के आलोक में देखते हैं।

(अल्फ़ज़्ल 14 मई 1925 ई.)

******